चूलियाए सम्मत्तुप्पत्तीए किटटीवेदणं

किटटीदो माणस्स पढमकिटटीए संकमदि पदेसग्गं थोवं कोधस्स तदियकिटटीदो माणस्स पढमाए संगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं माणस्स पढमादो संगहकिटटीदो मायाए पढमसंगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहिय (१ किटटीवेदगपढमे कोहस्स य विदियादो दु तदियादो माणस्स य पढमगदो माणतियादो दु माणपढम-गदो मायतियादो लोभस्सादिगदो लोभपढमदो विदियं तदियं च गदा दव्वा दसपदमध्दियकमा होंति लब्धि. ५७५-५७६.) माणस्स विदियादो संगह-कटटीदो मायाए पढमसंगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं माणस्स तदियादो संगहकिटटोदो (२(तदियादो संगहकिटटीदो)मु.) मायाए पढमसंगहकिटटीए सकमदी पदेसग्गं विसेसाहियं मायाए पढमसंगहकिटटीदो लोभस्स पढमसंगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं मायाए विदिय-संगहकिटटीदो लोभस्स पढमाए संगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं तदियसंगहकिटटीदो लोभस्स पढमाए संगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं लोभस्स पढमकिटटीओ लोभस्स चेव विदियसंगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं लोभस्स पढमसंगहकिटटीदो तस्स चेव तदियसंगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं विसेसाहियं कोधस्स पढमसंगहकिटटीदो माणस्स पढमसंगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं कोधस्स चेव पढमसंगहकिटटीदो कोधस्स तदियसंगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं विसेसा-

वालेके क्रोधकी द्वितीय संग्रहकृष्टिसे मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें स्तोक प्रदेशाग्र संक्रमण करता है क्रोधकी तृतीय संग्रहकृष्टिसे मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक संक्रमण करता है मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिसे मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिसे मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक संक्रमण करता है मानकी द्वितीय संग्रहकृष्टिसे मायाकी प्रथम संग्रह-कृष्टिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक संक्रमण करता है मानकी तृतीय संग्रहकृष्टिसे मायाकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक संक्रमण करता है मायाकी द्वितीय संग्रहकृष्टिसे लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक संक्रमण करता है (मायाकी तृतीय संग्रहकृष्टिसे) लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक संक्रमण करता है लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिसे लोभकी ही द्वितीय संग्रहकृष्टिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक संक्रमण करता है लोभकी प्रथम संग्रहकृष्टिसे उसकी ही तृतीय संग्रह-कृष्टिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक संक्रमण करता है

क्रोधकी प्रथम संग्रहकृष्टिसे मानकी प्रथम संग्रहकृष्टिमें संख्यातगुणा प्रदेशाग्र संक्रमण करता है क्रोधकी ही प्रथम संग्रह-कृष्टिसे क्रोधकी तृतीय संग्रहकृष्टिमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक संक्रमण करता है क्रोधकी

छक्खंडागमे जीवटठाणं

हियं कोहस्स पढमसंगहकिटटीदो कोधस्स चेव विदियसंगहकिटटीए संकमदि पदेसग्गं संखेज्जगुणं एसो पदेससंकमो अदिक्क्तो वि उक्खेदिदो सुहूमसांपराइयकिटटीणं कीर-माणीणं आसओ त्ति कादूण (१ एदस्सत्थो वुच्चदे-एसो पदेंससंकमो बादरकिटटीविसयो अइक्क्तो वि उक्खेदिदो, अइक्कंतावसरो वि संतो पुणरुक्खिविदूण भणिदो किमटठमेवं भणिज्जदित्ति चे, सुहुमसांपराइयकिटटीसु कीरमाणीसु आसवो त्ति कादूण सुहुमसांपराइयकिटटीसु कीरमाणीसु जो पदेससंकमो पदिदो तस्स कारणभूदो त्ति कादूण अइक्कंतावसरो वि होंतो एसो पदेससंकमो पुणरुच्चाइदूण भणिदो त्ति वुत्तं होई जयध. अ.प. १२०२.)

सहुमसांपराइयकिटटीसु पढमसमए दिज्जदि पदेसग्गं थोवं विदियसमए असंखेज्जगुण एवं जाव चरिमसमयादो त्ति ताव असंखेज्जगुणं एदेण कमेण लोभस्स विदियकिटिट वेदयमाणस्स जा पढमटिठदो तिस्से पढमटिठदीए समयाहियावलिया सेसा त्ति तम्हि समए चरिमसमयबादरसांपराइओ तम्हि चेव समए लोभस्स चरिमबादर (२ समयबादर ता.१, चरिमयबादर ता.२,) सांप-राइयकिटटी संछुब्भमाणा संछुध्दा लोभस्स विदियकिटटीए दो आवलियबंधे समऊणे मोत्तूण उदयावलियपविटठं च मोत्तूण सेसाओ विदियकिटटीए अंतरकिटटीओ संछुब्भमाणीओ संछुध्दाओ

तम्हि चेव लोभसंजलणस्स टिठदिबंधो अंतोमुहुत्तं, तिण्हं घादिकम्माणं अहो -

प्रथम संग्रहकृष्टिसे क्रोधकी ही द्वितीय संग्रहकृष्टिमें संख्यातगुणा प्रदेशाग्र संक्रमण करता है यह बादरकृष्टिविषयक प्रदेशसंक्रमण यद्यपि अतिक्रान्त हो चुका है तो भी सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंके करनेमें प्राप्त प्रदेशसंक्रमणका कारणभूत मानकर पुन: कहा गया है

सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें प्रथम समयमें प्रदेशाग्र स्तोक दिया जाता है द्वितीय समयमें असंख्यातगुणा दिया जाता है इस प्रकार बादरसाम्परायिकके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणा प्रदेशाग्र दिया जाता है इस क्रमसे लोभकी द्वितीय कृष्टिको वेदन करनेवालेके जो प्रथमस्थिति है उस प्रथमस्थितिकी एक समय अधिक आवलिमात्र शेष रहती है उस समयमें अन्तिमसमयवर्ती

बादरसाम्परायिक होता है उसी अनिवृत्तिकरणके अन्तिम समयमे संक्रम्यमाण लोभकी अन्तिम बादरसाम्परायिक कृष्टि पूर्णतया सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें संक्रमणको प्राप्त हो जाती है लोभकी द्वितीय कृष्टिके एक समय कम दो आवलिमात्र नवक समयप्रबध्दोंको तथा उदयावलिप्रविष्ट द्रव्यको छोडकर शेष संक्रम्यमाण द्वितीय कृष्टिकी अन्तरकृष्टियां संक्रमणको प्राप्त हो जाती हैं

उसी समयमें संज्वलनलोभका स्थितिबन्ध अन्तर्मुहुर्त और तीन घातिया

चूलियाए सम्मत्तुप्पत्तीए किटटीवेदणं

रत्तस्स अंतो, णामा-गोद-वेदणीयाणं बादरसांपराइयस्स जो चरिमो टिठदिबंधो सो संखेज्जेहि वस्ससहस्सेहि हाइदूण वस्सस्स अंतो जादो चरिमसमयबादरसांपराइयस्स मोहणीयस्स टिठदिसंतकम्मं अंतोमुहुत्तं, तिण्हं घादिकम्माणं टिठदिसंतकम्मं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि, णामा-गोद वेदणीयाणं टिठदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि

से काले पढमसमयसुहुमसांपराइयो जादो ताधे चेव सुहुमसांपराइयकिटटीणं जाओ टिठदिओ तदो टिठदिखंडयमागाइदं तदो पदेसग्गमोकटिटदूण उदये थोवं दिण्ण (१ सुहुमसांपराइयकिटटीणमुक्कीरिज्जमाणाणुक्कीरिज्जमाणटिठदीहिंतो पदेसग्गससंखेज्जदिभागमोकटिटयूण पुणो ओकटिटदसयलदव्वासंखेज्जे भागे पुध टठविय तदसंखेज्जभागमेत्तपदेसग्गं गुणसेढीए णिसिंचमाणो उदयटिठदीए थोवयरमेव पदेसग्गमसंखेज्जसमयपबध्दपमाणं णिसिंचदि त्ति वुत्तं होदि जयध.अ.प. १२०३.) एवमंतोमुहुत्तध्दमेतमसंखज्जगुणाए सेडीए देदि गुणसेडिणिक्खेवो सुहुमसांपराइयध्दादो विसेसुत्तरो गुणसेडीसीसयादो जा अणंतरटिठदी तत्थ असंखेज्जगुणं तत्तो विसेसहीणं ताव जाव पुव्वसमए अंतरमासि तस्स अंतरस्स चरिमादो त्ति चरिमादो अंतरटिठदीदो पुव्वसमए जा विदियटिठदी तिस्से आदिटिठदीए दिज्जमाणं पदेसग्गं संखेज्जगुणहीणं तत्तो विसेसहीण

कर्मोका अहोरात्रका अन्त अर्थात कुछ कम एक दिनप्रमाण होता है नाम, गोत्र व वेदनीय, इनका बादरसाम्परायिकके जो अन्तिम स्थितिबन्ध होता था वह संख्यात वर्षसहस्त्रोंसे घटकर वर्षका अन्त अर्थात कुछ कम एक वर्षमात्र रह जाता है अन्तिमसमयवर्ती बादरसाम्परायिकके मोहनीयका स्थितिसत्व अन्तर्मुहुर्त, तीन घातिया कर्मोका स्थितिसत्व संख्यात वर्षसहस्त्र; और नाम, गोत्र व वेदनीय इनका स्थितिसत्व असंख्यात वर्षप्रमाण होता है

अनन्तर समयमें प्रथम समय सूक्ष्मसाम्परायिक हो जाता है उसी समयमें ही सूक्ष्म-साम्परायिक कृष्टियोंकी जो अन्तर्मुहूर्तप्रमाण स्थितियां हैं उनके संख्यातवें भागमात्र स्थिति-कांडको ग्रहण करना प्रारम्भ करता है सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंकी उत्कीर्यमाण और अनुत्कीर्यमाण स्थितियोंसे प्रदेशाग्रका अपकर्षण कर उदयमें स्तोक प्रदेशाग्रको देता है इस प्रकार अन्तर्मुहुर्तमात्र काल तक असंख्यातगुणित श्रेणीसे देता है गुणश्रेणिनिक्षेप सूक्ष्म-साम्परायिककालसे विशेष अधिक है गुणश्रेणिशीर्षसे जो अनन्तर स्थिति है उसमें असंख्यातगुणे प्रदेशाग्रको देता है इससे आगे अन्तरस्थितियोंमें उत्तरोत्तर क्रमसे पूर्व समयमें जो अन्तर था उस अन्तरकी अन्तिम अन्तरस्थिति तक विशेष हीन प्रदेशाग्रको देता है अन्तिम अन्तर-स्थितिसे पूर्व समयमें जो द्वितीय स्थिति है उसकी प्रथम स्थितिमें दीयमान प्रदेशाग्र संख्यात-गुणा हीन है इसके आगे उपरिम स्थितिमें दीयमान प्रदेशाग्र विशेष हीन है

छक्खंडागमे जीवटठाणं

पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स जमोकटिटज्जदि पदेसग्गं तमेदाए सेडीए णिक्खि-वदि वदियसमए वि तदियसमए वि एसो चेव कमो ओकटिटदूण णिसिंचमाणपदे-सम्मस्स ताव जाव सुहुमसांपराइयस्स पढमटिठदिखंडओ णिल्लेविदो त्ति विदियादो टिठदिखंडयादो ओकटिटदूण जं पदेसग्गमुदए दिज्जदि तं थोवं तदो असंखेज्जगुणाए सेडीए दिज्जदि ताव जाव गुणसेडीसीसयादो उवरिमाणंतरा (१ प्रतिषु उवरिमाणंतराए इति पाठ :) एक्का टिठदि त्ति तदो विसेसहीणं एत्तो पाए सुहुमसांपराइयस्स जाव मोहणीयस्स टिठदिघादो ताव एस कमो

पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स जं दिस्सदि पदेसग्गं तस्स सेडीपरुवणं वत्तइस्सामो तं जहा-पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स उदए दिस्सदि पदेसग्गं थोवं विदियाए टिठदीए असंखेज्जगुणं एवं ताव जाव गुणसेडीसीसयं ति गुणसेडीसीसयादो अण्णा च एक्का टिठदि त्ति तदो विसेसहीणं जाव चरिमअंतरटिठदि त्ति तदो असंखेज्जगुणं, तत्तो विसेसहीणं एस कमो ताव जाव सुहुमसांपराइयस्स पढमटिठदिखंडगो चरिमसमय अणिल्लेविदो त्ति (२ अंतरपढमठिदित्ति य असंखगुणिदक्कमेण दिस्सदि हु हीणकमेण असंखेज्जेण गुणंतो विहीणकमं लब्धि. ५८७.) पढमटिठदिखंडए णिल्लेविदे जमुदए पदेसग्गं दिस्सदि तं थोवं विदियाए

प्रथम समय सूक्ष्मसाम्परायिक जिस प्रदेशाग्रका अपकर्षण करता है उसे इस श्रेणीक्रमसे देता है द्वितीय और तृतीय समयमें भी इसी क्रमसे देता है इस प्रकार अपकर्षण करके दीयमान

प्रदेशाग्रका यह क्रम तब तक चालू रहता है जब तक सूक्ष्मसाम्परायिकका प्रथम स्थितिकांडक निर्लेपित अर्थात समाप्त होता है द्वितीय स्थितिकांडकसे अपकर्षण कर जो प्रदेशाग्र उदयमें दिया जाता है वह स्तोक है इसके आगे असंख्यातगुणित श्रेणीसे तब तक दिया जाता है जब तक कि गुणश्रेणिशीर्षके ऊपर एक अनन्तर स्थिति प्राप्त होती है इसके आगे विशेष हीन प्रदेशाग्र दिया जाता है यहांसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकके जब तक मोहनीयका स्थितिघात होता है तब तक यह क्रम रहता है

प्रथम समय सूक्ष्मसाम्परायिकके जो प्रदेशाग्र दृश्यमान है उसकी श्रेणि प्ररुपणाको कहते हैं वह इस प्रकार है -- प्रथम समय सूक्ष्मसाम्परायिकके उदयमें स्तोक प्रदेशाग्र दिखता है द्वितीय स्थितिमें असंख्यातगुणा प्रदेशाग्र दिखता है इस प्रकार यह क्रम गुणश्रेणिशीर्ष तक तथा उससे आगे अन्य एक स्थिति तक चालू रहता है इससे आगे अन्तिम अन्तरस्थिति तक विशेष हीन प्रदेशाग्र दिखता है पुन: इससे असंख्यातगुणा प्रदेशाग्र दिखता है पश्चात उससे विशेष हीन प्रदेशाग्र दिखता है यह क्रम तब तक चालू रहता है जब तक कि सूक्ष्मसाम्परायिकके प्रथम स्थितिकांडकके निर्लेपित होनेपर जो प्रदेशाग्र उदयमें दिखता है वह स्तोक है द्वितीय स्थितिमें जो प्रदेशाग्र दिखता है वह

टिठदीए जं दिस्सदि तमसंखेज्जगुणं (एवं (१ एवं पाठो नास्ति ता.१,२)) ताव जाव गुणसेडीसीसयादो अण्णा च एक्का टिठदि त्ति असंखेज्जगुणं दिस्सदि तत्तो विसेसहीणं जाव उक्कस्सिया मोहणीयटिठदि (२ अंतरपढमठिदि त्ति य असंखगुणिदक्कमेण दिस्सहि हु हीणं तु मोहविदियटिठदिखंडयदो दुधादो त्ति पढमगुणसेढिसीसं पुव्विल्लादो असंखसंगुणियं उवरिमसमये दिस्सं विसेसअहिअं हवे सीसे लब्धि. ५९०-५९१.) त्ति

सुहुमसांपराइयस्स पढमटिठदिखंडए पढमसमयणिल्लेविदे गुणसेडिं मोत्तूण सेसि-यासु टिठदीसु केण कारणेण गोवुच्छा सेडी जादा त्ति एदस्स साहणटठं इमाणि अप्पा-बहुअपदाणि (३एदेणप्पाबहुगविधाणेण विदियखंडयादीसु गुणसेढिमुज्झियेया गोपुच्छा होदि सुहुमम्हि लब्धि. ५९३.) तं जहा-सव्वत्थोवा सुहुमसांपराइयध्दा पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स मोहणीयस्स गुणसेडीणिक्खेवो विसेसाहिओ अंतरटिठदीओ संखेज्जगुणाओ सुहुम-सांपराइयस्स पढमो टिठदिखंडओ मोहणीये संखेज्जगुणो पढमसमयसुहुमसांपराइयस्स मोहणीयस्स टिठदिसंतकम्मं

सखेज्जगुणं (४ सुहुमध्दादो अहिया गुणसेढी अंतरं तु तत्तो दु पढमे खंडं पढमे संतो मोहस्स संखगुणिदकमा लब्धि. ५९२.)

लोभस्स विदियकिटिट वेदयमाणस्स जा पढमटिठदी तिस्से पढमटिठदीए जाव तिण्णि आवलियाओ सेसाओ ताव लोभस्स विदियकिटटीदो लोभस्स तदियकिटटीए संछुहदि पदेसग्गं तेण परं ण संछुहदि; सव्वं सुहुमसांपराइयकिटटीसु संछुहदि लोभस्स विदिय-

असंख्यातगुणा है इस प्रकार जब तक गुणश्रेणिशीर्षके आगे एक अन्य स्थिति प्राप्त नहीं होती तब तक असंख्यातगुणा प्रदेशाग्र दिखता है मोहनीयकी उकृष्ट स्थिति तक इससे विशेष हीन प्रदेशाग्र दिखता है

सूक्ष्मसाम्परायिकके प्रथम स्थितिकांडकके उत्कीर्ण होनेके पश्चात प्रथम समयमें गुणश्रेणीको छोडकर शेष स्थितियोंमें किस कारणसे गोपुच्छ श्रेणी हुई हैं, इसके साधनेके लिये ये अल्पबहुत्वपद हैं जैसे --सबसे स्तोक सूक्ष्मसाम्परायिककाल है प्रथम समय सूक्ष्मसाम्परायिकके मोहनीयका गुणश्रेणीनिक्षेप विशेष अधिक है अन्तरस्थितियां संख्यातगुणी हैं सूक्ष्मसाम्परायिकके मोहनीयका प्रथम स्थितिकांडक संख्यातगुणा है प्रथम समय सूक्ष्मसाम्परायिके मोहनीयका स्थितिसत्व संख्यातगुणा है

लोभकी द्वितीय कृष्टिको वेदन करनेवालेके जो प्रथमस्थिति है उस प्रथम-स्थितिकी जब तक तीन आवलियां शेष हैं तब तक लोभकी द्वितीय कृष्टिसे लोभकी तृतीय कृष्टिमें प्रदेशाग्रको स्थापित करता है उसके पश्चात तृतीय कृष्टिमें स्थापित नहीं करता, किन्तु सब प्रदेशाग्रको सूक्ष्मसापम्रायिक कृष्टियोंमें स्थापित करता है लोभकी

किटिटं वेदयमाणस्स जा पढमटिठदी तिस्से पढमटिठदीए आवलियाए समयाहियाए सेसाए ताधे जा लोभस्स तदियकिटटी सा सव्वा णिरवयवा सुहुमसांपराइयकिटटीसु संक्ता (जा) विदियकिटटी तिस्से दो आवलियसमऊणे बंधे मोत्तूण उदयावलियपविटठंच सेसं सव्वं सुहुमसांपराइयकिटटीसु संक्तं ताधे चरिमसमयबादरसांपराइओ मोहणीयस्स चरिम-समयबंधगोच जादो (१ बंधगो जादो मु.)

से काले पढमसमयसुहुमसांपराइओ जादो ताधे सुहुमसांपराइयकिटटीणम-संखेज्जा भागा उदिण्णा हेटठा अणुदिण्णाओ थोवाओ, उवरि अणुदिण्णाओ विसेसाहियाओ मज्झे

उदिण्णाओ सुहुमसांपराइयकिटटीओ असंखेज्जगुणाओ (२ सुहुमाणं किटटीणं हेटठा अणुदिण्णगा हु थोवाओ उवरिं तु विसेसाहियामज्झे उदया असंखगुणा लब्धि. ५९४.) सुहुम-सांपराइयस्स संखेज्जेसु टिठदिखंडयसहस्सेसु गदेसु जमपच्छिमटिठदिखंडयं मोहणीयस्स तम्हि टिठदिखंडए उक्कीरमाणे जो मोहणीयस्स गुणसेडीणिक्खेवो तस्स गुणसेडी-णिक्खेवस्स अग्गग्गादो संखेज्जदिभागो आगाइदो (३ सुहुमे संखसहस्से खंडे तीदे वसाणखडेण आगायदि गुणसेढी आगादो संखंभागे च लब्धि. ५९५,) तम्हि टिठदिखंडए उक्किण्णे तदो प्पहुडि मोहणीयस्स णत्थि ठिठदिघादो सुहुमसांपराइयध्दाए जत्तियं सेसं तत्तियं

द्वितीय कृष्टिको वेदन करनेवालेके जो प्रथमस्थिति है उस प्रथमस्थितिकी एक समय अधिक आवलिके शेष रहनेपर उस समयमें जो लोभकी तृतीय कृष्टि है वह सब अवयवकृष्टियोंसे रहित होतीं हुई सूक्ष्मसांपरायिक कृष्टियोंमें संक्रमणको प्राप्त हो चुकती है जो द्वितीय कृष्टि है उसके एक समय कम दो आवलिमात्र नवक बंधको छोडकर तथा उदयावलिप्रविष्ट द्रव्यको भी छोडकर शेष सब प्रदेशाग्र सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें संक्रमणको हो जाता है उस समय जीव अन्तिम-समयवर्ती बादरसाम्परायिक व मोहनीयका अन्तिमसमयवर्ती बन्धक होता है

अनन्तर कालमें जीव प्रथमसमयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक हो जाता है उस समयमें सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियां अनुदीर्ण हैं वे स्तोक हैं जो ऊपर अनुदीर्ण हैं वे उनसे विशेष अधिक हैं मध्यमें जो सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियां उदीर्ण हैं वे असंख्यातगुणी हैं सूक्ष्मसाम्परायिकके संख्यात-स्थितिकांडकोंके चले जानेपर जो अन्तिम स्थितिकांडक है, उस स्थितिकांडकके उत्कीर्ण करते समय जो मोहनीयका गुणश्रेणीनिक्षेप है उस गुणश्रेणिनिक्षेपके उत्तरोत्तर अग्राग्रसे संख्यातवें भागको ग्रहण करता है उस स्थितिकांडकके उत्कीर्ण हो जानेपर यहांसे लेकर मोहनीयका स्थितिघात नहीं होता सूक्ष्मसाम्परायिककालमें जितना काल

चूलियाए सम्मत्तुप्पत्तीए खवगणाणत्तपरुवणं

मोहणीयस्स टिठदिसंतकम्म सेस (१ उक्किणे अवसाणे खंडे मोहस्स णत्थि ठिदिघादो ठिदिसत्तं मोहस्स य सुहुमध्दासेसपरिमाणं लब्धि. ५९७.) एसा परुवणा पुरिसवेदयस्स कोधेण उवटिठदस्स

पुरिसवेदयस्स चेव माणेण उवटिठदस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो तं जहा -- अंतरे अकदे णत्थि णाणत्तं अंतरकदे अत्थि णाणत्तं अंतरे कदे कोधस्स पढमटिठदी णत्थि, माणस्स अत्थि सा केम्महंती ? जददेही कोधेण उवटिठदस्स कोधस्स पढमटिठदी (२ पढमकिटटी मु.) कोधस्स चेव

खवणध्दा च, एम्महंती माणेण उवटिठदस्स माणस्स पढमटिठदी जम्हि कोधेण उव-टिठदो अस्सकण्णकरणं करेदि, माणेण उवटिठदो तम्हि काले कोधं खवेदि कोधेण उवटिठदस्स जा किटटीकरणध्दा, माणेण उवटिठदस्स तम्हि काले अस्सकण्णकरणध्दा कोधेण उवटिठदस्स जा कोधस्स खवणध्दा, माणेण उवटिठदस्स तम्हि काले किटटीकरणध्दा कोधेण उवटिठदस्स माणस्स जा खवणध्दा, माणेण उवटिठदस्स तम्हि चेव काले माणस्स खवणध्दा एत्तो पाए जहा कोधेण उवटिठदस्स विही तहा माणेण वि उवटिठदस्स पुरिसवेदयस्स

मायाए उवटिठदस्स णाणत्तं (३ एत्थ णाणत्तमिदि वुत्ते भेदो विसेसो पुधभावो त्ति एयटठो जयध.अ.प. १२२६.) वत्तइस्सामो तं जहा-कोधेण उवटिठदस्स जम्म-

शेष है उतना मोहनीयका स्थितिसत्व शेष है यह प्ररुपणा क्रोधसे उपस्थित पुरुषवेदीकी है

मानसे उपस्थित पुरुषवेदोकी विशेषताको कहते हैं वह इस प्रकार है ---अन्तरके न करनेपर अर्थात अन्तरकरणसे पूर्वअवस्थामें वर्तमान क्षपकोंके कोई विशेषता नहीं है किन्तु अन्तरकर चुकनेपर विशेषता हैं अन्तर कर चुकनेपर क्रोधकी प्रथमपरिस्थिति नहीं है किन्तु मानकी प्रथमस्थिति है

शंका-- वह मानकी प्रथमस्थिति कितनी बडी है ?

समाधान-- क्रोधसे उपस्थित हुए जीवके जितनी क्रोधकी प्रथमस्थिति और क्रोधका ही क्षपणाकाल है, उतनी बडी मानसे उपस्थित हुए जीवके मानकी प्रथमस्थिति हैं

जिस कालमें क्रोधसे उपस्थित हुआ अश्वकर्णकरणको करता है उस कालमें मानसे उपस्थित हुआ क्रोधका क्षय करता है क्रोधसे उपस्थित हुए जीवका जो कृष्टिकरणकाल है, मानसे उपस्थित हुएका उस कालमें अश्वकर्णकरणकाल है क्रोधसे उपस्थित हुएके जो क्रोधका क्षपणाकाल हैं, मानसे उपस्थित हुएके उसीं कालमें मानका क्षपणाकाल है यहांसे लेकर जैसी क्रोधसे उपस्थित हुए पुरुषवेदी जीवकी विधि है, वैसी ही मानसे भी उपस्थित हुए पुरुषवेदीकी विधि है

मायासे उपस्थित हुए पुरुषवेदीकी विशेषताको कहते हैं वह इस प्रकार है --

हंती कोधस्स पढमटिठदी, क्रोधस्स चेव खवणध्दा, माणस्स खवणध्दा च, मायाए उव-टिठदस्स एम्महंती मायाए पढमटिठदी॑ कोधेण उवटिठदो जम्हि अस्सकण्णकरणं करेदि, मायाए उवटिठदो

तम्हि कोधं खवेदि कोधेण उवटिठदो जम्हि किटटीओ करेदि, मायाए उवटिठदो तम्हि माणं खवेदि कोधेण उवटिठदो जम्हि कोधं खवेदि मायाए उवटिठदो तम्हि अस्सकण्णकरणं करेदि कोधेण उवटिठदो जम्हि माणं खवेदि, मायाए उवटिठदो तम्हि किटटीओ करेदि कोधेण उवटिठदो जम्हि मायं खवेदि, तम्हि चेव मायाए उव-टिठदो मायं खवेदि एत्तो पाए लोभं खवेमाणस्स णत्थि णाणत्तं पुरिसवेदयस्स लोभेण उवटिठदस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो-जाव अंतरं ण करेदि ताव णत्थि णाणत्तं अंतरं करेमाणो लोभस्स पढमटिठदिं टठवेदि सा केम्महंती ? जददेही कोधेण उवटिठदस्स क्रोधस्स पढमटिठदी, कोध-माण-मायाणं खवणध्दाच, तददेही लोभेण उवटिठदस्स लोभस्स पढमटिठदी कोधेण उवठिठदो जम्हि अस्सकण्णकरणं करेदि, लोभेण

क्रोधसे उपस्थित हुएके जितनी बडी क्रोधकी प्रथमस्थिति, क्रोधका ही क्षपणाकाल और मानका भी क्षपणाकाल है, उतनी बडी मायासे उपस्थित हुएके मायाकी प्रथम-स्थिति है क्रोधसे उपस्थित हुआ जिस कालमें अश्वकर्णकरण करता है, मायासे उपस्थित हुआ उस कालमें क्रोधका क्षय करता है क्रोधसे उपस्थित हुआ जिस कालमें कृष्टियोंको करता है मायासे उपस्थित हुआ उस कालमें मानका क्षय करता है क्रोधसे उपस्थित हुआ जिस कालमें क्रोधका क्षय करता है, मायासे उपस्थित हुआ उसमें अश्वकर्णकरणको करता है क्रोधसे उपस्थित जिस कालमें मानका क्षय करता है, मायासे उपस्थित उस कालमें कृष्टियोंको करता है क्रोधसे उपस्थित जिस कालमें मायाका क्षय करता है, उसी कालमें ही मायासे उपस्थित मायाका क्षय करता है यहांसे लेकर लोभका क्षय करनेवालेके कोई विशेषता नहीं है

लोभसे उपस्थित हुए पुरुषवेदककी विशेषताको कहते हैं जब तक अन्तर नहीं करता है, तब तक कोई विशेषता नहीं है अन्तरको करनेवाला लोभकी प्रथमस्थितिको स्थापित करता है

शंका -- वह लोभकी प्रथमस्थिति कितने प्रमाणरुप है ?

समाधान -- जितनी क्रोधके उदयसे उपस्थित क्षपकके क्रोधकी प्रथमस्थिती, तथा क्रोध, मान एवं मायाका क्षपणकाल है, उतनीमात्र लोभसे उपस्थित क्षपकके लोभकी प्रथमस्थिति है क्रोधसे उपस्थित हुआ क्षपक जिस कालमें अश्वकर्णकरणको

उवटिठदो तम्हि कोधं खवेदि कोधेण उवटिठदो जम्हि किटटीओ करेदि, लोभेण उवटिठदो तम्हि माणं खवेदि कोधेण उवटिठदो जम्हि कोधं खवेदि, लोभेण उवटिठदो तम्हि मायं खवेदि कोधेण

उवटिठदो जम्हि माणं खवेदि, लोभेण उवटिठदो तम्हि अस्सकण्णकरणं करेदि कोधेण उवटिठदो जम्हि मायं खवेदि लोभेण उवटिठदो तम्हि किटटीओ करेदि कोधेण उवटिठदो (१ उवटिठदस्स मु.) जम्हि लोभं खवेदि, तम्हि चेव लोभेण उवटिठदो लोभं खवेदि एसा सव्वा सण्णियासपरुवणा पुरिसवेदेण उवट्िठदस्स

इत्थिवेदेण उवटिठदस्स खवयण णाणत्तं वत्तइस्सामो तं जहा---जाव अंतरं ण करेदि ताव णत्थि णाणत्तं अंतरं करेमाणो इत्थिवेदस्स पढमटिठदिं टठवेदिं टठवेदि जददेही पुरिसवेदेण उवटिठदस्स इत्थिवेदस्स खवणध्दा, तददेहि इत्थिवेदेण उवटिठदस्स इत्थिवेदस्स पढमट्िठदी णवुंसयवेदं खवेमाणस्स णत्थि णाणत्तं णवुंसयवंदे खीणे इत्थिवेदं खवेदि जम्महंती पुरिसवेदेण उवटिठदस्स इत्थिवेदखवणध्दा, तम्हहंति इत्थिवेदेण उवटिठदस्स इत्थिवेदस्स खवणध्दा तदो अवगदवेदो सत्त कम्मंसे खवेदि (२ पुरिसोदएण चडिदस्सित्थीखवणध्दउत्ति पढमठिदि इत्थिस्स सत्त कम्मं अवगदवेदो समं विणासेदि लब्धि. ६०६.) सत्तण्हं हि कम्माणं तुल्ला

करता है उस समयमें लोभसे उपस्थित क्षपक क्रोधका क्षय करता है क्रोधसे उपस्थित क्षपक जिस कालमें कृष्टियोंको करता है, लोभसे उपस्थित क्षपक उस कालमें मानका क्षय करता है क्रोधसे उपस्थित जिस कालमें क्रोधका क्षय करता है, लोभसे उपस्थित उस कालमें मायाका क्षय करता है क्रोधसे उपस्थित जिस कालमें मानका क्षय करता है, लोभसे उपस्थित उस कालमें अश्वकर्णकरणको करता है क्रोधसे उपस्थित जिस कालमें मायाका क्षय करता है, लोभसे उपस्थित उस कालमें कृष्टियोंको करता है क्रोधसे उपस्थित जिस कालमें लोभका क्षय करता है, लोभसे उपस्थित भी उस कालमें क्षय करता है यह सब सादृश्यप्ररुपणा पुरुषवेदसे उपस्थित क्षपककी है

स्त्रीवेदसे उपस्थित क्षपककी विशेषता को कहते हैं वह इस प्रकार है -- जब तक अन्तर नहीं करता तब तक कोई भेद नहीं है अन्तरको करता हुआ स्त्रीवेदकी प्रथमस्थितिको स्थापित करता है जितनामात्र पुरुषवेदसे उपस्थित क्षपकके स्त्रीवेदका क्षपणाकाल है, उतनीमात्र स्त्रीवेदसे उपस्थित क्षपकके स्त्रीवेदकी प्रथमस्थिति है नपुंसकवेदका क्षय करनेवालेके कोई विशेषता नहीं है नपुंसकवेदके क्षीण होनेपर स्त्रीवेदका क्षय करता है जितने प्रमाणरुप पुरुषवेदसे उपस्थित क्षपकके स्त्रीवेदका क्षपणाकाल है उतने प्रमाणरुप स्त्रीवेदसे उपस्थित

क्षपकके स्त्रीवेदका क्षपणाकाल है स्त्रीवेदकी प्रथमस्थितिके क्षीण होनेपर अपगतवेद होकर सात (हास्यादिक छह और पुरुषवेद) कर्मोका क्षय करता है सातों ही कर्मोका क्षपणाकाल तुल्य है शेष

छक्खंडागमे जीवटठाणं

खवणध्दा सेसेसु पदेसु णत्थि णाणत्तं

त्तो णवुंसयवेदेण उवटिठदस्स खवगस्स णाणत्तं वत्तइस्सामो -- जाव अंतरं ण करेदि ताव णत्थि णाणत्तं अंतरं करेमाणो णवुंसयवेदस्स पढमट्ठिदिं ठवेदि जम्महंती इत्थीवेदेण उवटिठदस्स इत्थीवेदस्स इत्थीवेदस्स पढमटिठदी, तम्महंती णवुंसयवेदेण उवटिठदस्स णवुंसय-वेदस्स पढमटिठदी तदो अंतरदुसमयकदे णवुंसयवेदस्स णवुंसयवेद खवेदुमाढत्तो जददेहि पुरिसवेदेण उवटिठदस्स णवुंसयवेदस्स खवणध्दा तददेही णवुंसयवेदेण उवटिठदस्स णवुंसयवेदस्स खवणध्दा ण ताव (१ (ती इत्थिीवेदण....ण ताव) मु.)णवुंसयवेदो खीयदि तदो से काले इत्थिवेदं खवेदुमाढत्तो, णवुंसयवेदं हि खवेदि जम्हि पुरिसवेदेण उवटिठदस्स इत्थिवेदो खीणो तम्हि चेव णवुं-सयवेदेण उवटिठदस्स इत्थिवेदो णवुंसयवेदो च दो वि सह खीयंर्ति

तदो अवगदवेदो सत्त कम्मंसे खवेदि सत्तण्हं दि (२ हि.मु.) कम्माणं तुल्ला खवणध्दा सेसेसु पदेसु जहा पुरिसवेदेण उवटिठदस्स उत्तं तधा वत्तव्वं (३ थीपढमटिठदिमेत्ता संढस्स वि अंतरादु संढेक्क तस्सध्दाति दुवरिं संढा इच्छिच खवदि थोचरिमे अवगयवेदो संतो सत्त कसाये खवेदि कोहुदये पुरिसुदये चडणविही सेसुदयाणं तु हेटठवरिं लब्धि. ६०७-६०८.) जाधे चरिमसमयसुहूम-सांपराइयो जादो ताधे णामा-गोदाणं टिठदिबंधो अटठ मुहुत्ता ं वेदणीयस्स टिठदिबंधो बारस

पदोंमें कोई विशेषता नहीं है

यहांसे आगे नपुंसकवेदसे उपस्थित क्षपककी विशेषताको कहते हैं -- जब तक अन्तरको नहीं करता है तब तक कोई विशेषता नहीं है अन्तरको करता हुआ नपुंसकवेदकी प्रथमस्थितिको स्थापित करता है (स्त्रीवेदसे उपस्थित क्षपकके जितनी बडी स्त्रीवेदकी प्रथमस्थिति है, उतनी ही नपुंसकवेदसे उपस्थित क्षपकके नपुंसकवेदकी प्रथमस्थिति हैं पश्चात अन्तर करनेके दूसरे समयमें नपुंसकवेदका क्षय करना प्रारम्भ करता हैं पुरुषवेदसे उपस्थित क्षपकके जितना नपुंसक-वेदका क्षपणाकाल है उतना नपुंसकवेदसे उपस्थित क्षपकके नपुंसकवेदका क्षपणाकाल वीत जाता है, किन्तु तब तक नपुंसकवेद क्षीण नहीं होता) पश्चात

अनन्तर समयमें स्त्रीवेदका क्षय करना प्रारम्भ करके नपुंसकवेदका निश्चयसे क्षय करता है पुरुषवेदसे उपस्थित क्षपकका जिस समयमें स्त्रीवेद क्षीण होता है उसी समयमें ही नपुंसकवेदसे उपस्थित क्षपकके स्त्रीवेद और नपुंसकवेद दोनों ही एक साथ क्षयको प्राप्त होते हैं

तदनन्तर अपगतवेद होकर सात नोकषायोंका क्षय करता है सातों ही नोकषायोंका क्षपणाकाल तुल्य है शेष पदोंमें जैसी विधि पुरुषवेदसे उपस्थित क्षपककी कही गई है, वैसी यहां भी कहना चाहिये जिस समय अन्तिमसमयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक होता है, उस समयमें नाम व गोत्र कर्मोका स्थितिबन्ध आठ मुहूर्त वेदनीयका स्थितिबन्ध

चूलियाए सम्मत्तुप्पत्तीए खीणकसायपरुवणं

मुहुत्ता तिण्हं घादिकम्माणं टिठदिबंधो अंतोमुहुत्तं (१ णामदुगे वेयणीये अडवारसमुहत्तयं तिघादीणं अंतोमुहुत्तमेत्तं ठिदिबंधो चरिमसुहुमम्हि लब्धि.५९८.) तेसिं चेव तिण्हं टिठदिसंतकम्मं पि अंतोमुहुत्तं णामा गोद-वेदणीयाणं टिठदिसंतकम्ममसंखेज्जाणि वस्साणि (२ तिण्हं घादीणं ठिदिसंतो अंतोमुहुत्तमेत्तं तु तिण्हमघादीणं ठिदिसंतमसंखेज्जवस्साणि ‘ लब्धि. ५९९.) मोहणीयस्स टिठदिसंतकम्मं तत्थ णस्सदि

तदो से काले पढमसमयखीणकसाओ जादो ताधे चेव टिठदि-अणुभागाणम-बंधगो (३ ताधे चेव टिठदि-अणुभाग-पदेसस्स अबंधगो तदवस्थायामेव सर्वकर्मणां स्थित्यनुभवप्रदेशानामबन्धक इत्युक्तं भवति कषायो हि स्थित्यादिबन्धकारणं, तस्य तदन्वय-व्यतिरेकानुविधायित्त्वात्तत: कषायपरिमाणमसंक्लेषा पगमान्नास्य स्थित्यादिबन्धसम्भव इति सुनिरुपितमेतत पयडिबंधो पुण जोगमेत्तणिबंधणो खीणकसाये वि संभवदि त्ति ण तस्स पडिसेहो एत्थ कदो जयध. अ.प. १२३०. ठिदिअणुभागाणं पुण बंधो सुहुमो त्ति होदि णियमेण बंधपदेसाणं पुण संकमणं सुहुमरागो त्ति गो.क. ४२९. तत्र योगनिमित्तौ प्रकृति-प्रदेशौ, कषायनिमित्तौ स्थित्यनुभवौ तत्प्रकर्षाप्रकर्षभेदात्तध्दन्धविचित्रभाव: तथा चोक्तं - जोगा पयडि-पदेसा ठिदि-अणुभागा कसायदो कुणदि अपरिणदुच्छिण्णेसु य बंध-टिठदिकारणं णत्थि स.सि. ८,३., गो.क. २५७. से काले सो खीणकसाओ ठिदि-रसगबंधपरिहीणो लब्धि. ६००.) एवं जाव चरिमसमयाहियावलियछदुमत्थो ताव तिण्हं घादिकम्माणमुदीरगो तदो दुचरिमसमए णिददा-पयलाणमुदयसंतवोच्छेदो (४चरिमे खंडे पडिदे कदकरणिज्जो त्ति भण्णदे एसो तस्स दुचरिमे णिददा पयला सत्तुदयवोच्छिण्णा) तदो णाणावरण-दंसणावरण-अंत-

बारह मुहूर्त, और तीन घातिया कर्मोका स्थितिबन्ध अन्तर्मुहुर्तमात्र होता है इन्ही तीन घातिया कर्मोका स्थितिसत्व भी अन्तर्मुहूर्तमात्र होता है नाम, गोत्र व वेदनीय इनका स्थितिसत्व असंख्यात वर्षप्रमाण होता है॓ मोहनीयका स्थितिसत्व वहां नष्ट हो जाता है

चारित्रमोहनीयकेक्षयकेअनन्तर समयमें प्रथमसमयवर्ती क्षीणकषाय होता है उसी समयमें ही सब कर्मोकी स्थिति और अनुभागका अबन्धक होता है

विशेषार्थ -- कर्मोकी स्थिति और अनुभागके बन्धका कारण कषाय है अत एव कषायके क्षीण हो जानेपर कारणके अभावमें कार्याभावके न्यायानुसार, उक्त दोनों बन्धोंका भी अभाव हो जाता है किन्तु प्रकृतिबन्ध केवल योगके निमित्तसे होता है, और क्षीणकषाय हो जानेपर भी योगकी प्रवृत्ति रहती ही है अत एव यहां प्रकृतिबन्धका निषेध नहीं किया गया जयधवलानुसार प्रदेशबन्धका भी व्युच्छेद स्थिति व अनुभागके बन्धव्युच्छेदके साथ ही हो जाता है

इस प्रकार एक समय अधिक आवलिमात्र छदमस्थकालके शेष रहने तक तीन घातिया कर्मोका उदीरक होता है इसके पश्चात द्विचरम समयमें निद्रा और प्रचलाके उदय व सत्वकी व्युच्छित्ति हो जाती है तदन्तर एक समयमें ज्ञानावरण, दर्शना-

छक्खंडागमे जीवटठाणं

राइयाणमेगसमएण संतोदयवोच्छेदो तदो अणंतकेवलणाण-दंसण-वीरियजुत्तो जिणो केवली सव्वण्हू सव्वदरिसी सजोगिजिणो (१ असहायणाणदंसणसहिओ इदि केवली हूजोगेण जुत्तो त्ति सजोगो इदि अणाइणिहणारिसे वुतो जयध.अ.प.१२३४. गो.जो. ६४. चरिमे पढमं विग्धं चउदंसण उदयसत्तवोच्छिण्णा से काले जोगजिणोसव्वण्हू सव्वदरसी य लब्धि. ६०९.) असंखेज्जगुणाए सेडीए पदेसग्ग (२ अ-प्रत्योः सेडीए पढमसग्गं, कप्रतौ सेडीए पढमसमए पदेसग्गं इति पाठः) णिज्जरेमाणो विहरदि त्ति

तदो अंतोमुहुत्ते आउगे सेसे केवलिसमुग्घादं करेदि (३ अंतोमुहुत्तभाऊ परिसेसे केवली समुग्घादं दंड कवाटं पदरं लोगस्स य पूरणं कुणई लब्धि. ६२०. को केवलिसमुग्घादो णाम ? वुच्चदे -- उदगमनमुदघातः जीवप्रदेशानां विसर्पणमित्यर्थ :, समीचीन उदघातः समुघातः, केवलिनां समुदवातः केवलिसमुदघातः अघातिकर्मस्थितिसमीकरणार्थ केवलिजीवप्रदेशानां समयाविरोधेन ऊर्व्वमधस्तिर्यक्च विसर्पण केवलिसमुदघात इत्युक्तं भवति जयध. अ.प. १२३८. सम्यक अपुनर्भावेन उत्प्राबल्येन घातो वेदनीयदिकर्मणा विनाशो यस्मिन क्रियाविशेषे स समुध्दातः

पंचसंग्रह १, पृ २९ स यदान्तर्मुहूर्तशेषायुष्क-स्तत्तुल्यस्थितिवेद्यनामगोत्रश्च भवति, तदा सर्व वाङमानसयोगं बादरकाययोग च परिहाप्य सूक्ष्मकाययोगलम्बन: सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिध्यानमास्कन्दितुर्मुर्हतीति यदा पुनरन्तर्मुहुर्तशेषायुष्कस्ततोधिकस्थितिशेषकर्मत्रयो भवति सयोगी तदा त्मोपयोगतिशयस्य सामायिकसहायस्य विशिष्टकरणस्य महासंवरस्य लघुकर्मपरिपाचनस्याशेषकर्मरेणुपरिसातन-शक्तिस्वाभाव्यादण्डकपाटप्रतरलोकपूरणानि स्वात्मप्रदेशविसर्पणतत्र्चतुर्भि: समयै: कृत्वा समुहृतप्रदेशविसरण: समीकृतस्थितिशेषकर्मचतुष्टय: पूर्वशरीरप्रमाणो भून्वा सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिध्यानं ध्यायते ँ स.सि. ९, ४४.) पढमसमए दंडं करेदि (४ किंलक्षणो सो दंडसमुदघात इति चेदुच्यते -- अंतोमुहुत्ताउभे सेसे केवलीसमुग्घादं करेमाणो पुव्वाहिमुहो उत्तराहिमुहो वा होदूण काउसग्गेण वा करेदि पलियंकासणेण वा तत्थ काओसग्गेण दंडसमुग्घादं कुणमाणस्स मूलसरीर-परिणाहेण देसूणचोददसरज्जुआयामेण दंडायारेण जीवपदेसाणं विसप्पणं दंडसमुग्घादो णाम जयध अ.प. १२३८.) तम्हि टिठदीएअसंखेज्जे भागे हणदि सेसस्स च अणुभागस्स अप्पसत्थाणमणंते भागे हणदि

वरण और अन्तराय, इनके उदय व सत्वकी व्युच्छित्ति होती है पश्चात अनन्तर समयमें अनन्त केवलज्ञान, केवलदर्शन और अनन्त वीर्यसे युक्त जिन, केवली, सर्वज्ञ एवं सर्वदर्शी होकर सयोगिजिन प्रतिसमय असंख्यातगुणित श्रेणीसे कर्मप्रदेशाग्रकी निर्जरा करते हुए धर्मप्रवर्तनके लिये विहार करते हैं

पश्चात अन्तर्मुहूर्तमात्र आयुके शेष रहनेपर केवलिसमुदघातको करते हैं इसमें प्रथम समयमें दण्डसमुदघातको करते हैं उस दण्डसमुदघातमें वर्तमान होते हुए आयुको छोडकर शेष तीन अघातिया कर्मोकी स्थितिके असंख्यात बहुभागको नष्ट करते हैं इसके अतिरिक्त क्षीणकषायके अन्तिम समयमें घातनेसे शेष रहे अप्रशस्त प्रकृति-सम्बन्धी अनुभागके अनन्त बहुभागको भी नष्ट करते हैं द्वितीय समयमें कपाटसमु-

लब्धि. ६०३. खीणकसायदुचरिमे णिददा पयला य उदयवोच्छिण्णा णाणंतरायदंसयं दंसणचत्तारि चरिमम्हि गो.क. २७०. खीणे सोलसऽजोगे बायत्तरि तेरुवतंते गो.क. ३३७.

विदियसमए कवाडं करेदि (१ कपाटमिव कपाटम क उपमार्थ:? यथा कपाटं बाहल्येन स्तोकमेव भूत्वा विष्कंभायामाभ्यां परिवर्धते एवमयमपि जीवप्रदेशावस्थाविशेष: मूलशरीरबाहल्येन तत्त्रिगुणबाहल्येन वा देसूणचोददसरज्जूआयामेण सत्तरज्जुविखंभेण वडिढहाणिगदविक्खंभेण वा वडिढयूण चिटठदि त्ति कवाडसमुग्घादो त्ति भण्णंदे परिप्फुडमेवेत्थ कवाडसंठाणोवलंभादो जयध. अ.प. १२३८.) तम्हि सेसिगाए टिठदीए असंखेज्जे भागे हणदि सेसस्स च अणुभागस्स अप्पसत्याणमणंते भागे हणदि तदो तदियसमए मंथं करेदि टिठदि-अणुभागे तहेव णिज्जरयदि तदो चउत्थसमए लोगमावूरेदि (३ वादवलयारुध्दलोगागासपदेसेसु वि जीवपदेसेसु समंतदो णिरंतरं पविटठेसु लोगपूरणसण्णिदं चउत्थं केवलिसमुग्धादमेसो तदवत्थाए पडिवज्जादि त्ति भणिदं होदि जयध. अ.प. १२३९.) लोगे पुण्णे एक्का वग्गणा जोगस्स (४ लोगे पुण्णे एक्का वग्गणा जोगस्स त्ति समजोगो णायव्वो लोगपूरणसमुग्घादे वटटमाणस्सेदस्स केवलिणो लोगमेत्तासेसजीवपदेसेसु जोगाविभागपलिच्छेदा वडढीहाणीहि विणा सरिसा चेव होदूण परिणमंति तेण सव्वे जीवपदेसा अण्णोण्णं सरिसधणियसरुवेण परिणदा संवा एया वग्गणा जादा तदो समजोगी तित एसो तदवत्थाए णायव्वो, जोगसत्तीए सव्वजीवपदेसेसु सरिसभावं मोतूण विसरिसभावाणुवलंभादो त्ति वुत्तं होई जयध. अ.प. १२३९.) समजोगजादसमए टिठदि-अणुभागे तहेव णिज्जरयदि (५ ठिदिखंडमसंखेज्जे भागे रसखंडमप्पसत्थाणं हणदि अणंता भागा दंडादी चउसु समएसु लब्धि. ६२४.) लोगे पुण्णे

दधातको करते है उस कपाटसमुदघातमें वर्तमान रहकर शेष स्थितिके असंख्यात बहुभागको नष्ट करते हैं, तथा अप्रशस्त प्रकृतियोंके शेष अनुभागके भी अनन्त बहुभागको नष्ट करते हैं पश्चात तृतीय समयमें प्रतरसंज्ञित मंथसमुदघातको करते हैं इस समुदघातमें भी स्थिति व अनुभागको पूर्वके समान ही नष्ट करते हैं तत्पश्चात चतुर्थ समयमें अपने सब आत्मप्रदेशोंसे सब लोकको पूर्ण करके लोकपूरणसमुदघातको प्राप्त होते हैं लोकपूरणसमुदघातमें समयोग ही जानेपर योगकी एक वर्गणा हो जाती है

विशेषार्थ -- लोकपूरणसमुदघातमें वर्तमान केवलीके लोकप्रमाण समस्त जीवप्रदेशोंमे योगके अविभागप्रतिच्छेद वृध्दि-हानिसे रहित होकर सदृश हो जाते हैं अत एव सब जीवप्रदेशोंके परस्परमें समान होनेसे उन जीवप्रदेशोंकी एक वर्गणा ही जाती है

इस अवस्थामें भी स्थिति और अनुभागको पूर्वकेही समान नष्ट करते है

२ मथ्यते नेन कर्मेति मन्थः, अघादिकम्माणं टिठदिअणुभागणिव्वुहणटठो केव्रलिजीवपदेसाणीभवत्थाविसेसो पदरसण्णिदो मंथो त्ति वुत्तं होई जयध. अ.प. १२३८.

अंतोमुहुत्तटिठदिं ठवेदि संखेज्जगुणमाउआदो (१ जगपूरणम्हि एक्का जोगस्स य वग्गणा ठिदी तस्स अंतोमुहुतमेत्ता संखगुणा आउआ होदि लब्धि. ६२६.) एदेसु चदुसु समएसु अप्पसत्थकम्मंसाण-मणुभागस्स अणुसमयओवटटणा, एगसमइयो टिठदिखंडयस्स घादो (२ चउसमएसु रसस्स य अणुसमओवटटणा असत्थाणं ठिदिखंडस्सिगिसमयिगघादो अंतोमुहुत्तुवरिं लब्धि. ६२५.) एत्तो सेसियाए टिठदीए संखेज्जे भागे हणदि सेसस्स च अणुभागस्स अणंते भागे हणदि॰ एत्तो पाए टिठदिखंडयस्स अणुभागखंडयस्स च अंतोमुहुत्तिया उक्कीरध्दा

एत्तो अंतोमुहुत्तं गंतूण बादरकायजोगेण बादरमणजोगं णिरुंभदि तदो अंतो-मुहुत्तेण बादरकायजोगेण बादरवचिजोगं णिरुंभदि तदो अंतोमुहुत्तेण बादरकायजोगेण बादउस्सासणिस्सासं णिरुंभदि तदो अंतोमुहुत्तेण बादरकायजोगेण तमेव वादरकायजोगं णिरुंभदि॰ तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमकायजोगेण सुहुममणजोगं णिरुंभदि (३ योगनिरोधं कुर्वन प्रथमतो बादरकाययोगबलादन्तर्मुहूत्तमात्रेण बादरवाग्योगं निरुणध्दि, तन्निरोधा-नंतरं चान्तर्मुहूर्त स्थित्वा बादरकाययोगोपष्टम्भादेव बादरमनोयोगमन्तर्मुहूर्तमात्रेण निरुणध्दि XXX बादरमनोयोग निरोधानन्तरं च पुनरप्यन्तर्मुहूर्त्त स्थित्वा तत उच्छवासनिःत्र्वासावन्तर्मुहूर्तमात्रेण निरुणध्दि ततः पुनरप्यन्तर्मुहुर्त स्थित्वा सूक्ष्मकाययोगबलाध्दादरकाययोगं निरुणध्दि बादरयोगे सति सूक्ष्मयोगस्य निरोध्दमशक्यत्वात XXX केचिदाहुः - बादरकायबलाद्बादरकाययोगं निरुणध्दि, युक्ति चात्र वदन्ति-यथा कापत्रिकः स्तम्भोपरिस्थितस्तमेव स्तम्भं, छिनित्ति, तथा बादरकाययोगोपष्टम्माद बादरकाययोगं निहंतीति, तदत्र तत्वमतिशायिनो विदन्ति पंचसंग्रह १, पृ. ३०-३१.) तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमवचिजोगं णिरुंभदि तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमकायजोगेण

लोकपूरणसमुदघातमें आयुसे संख्यातगुणी अन्तर्मुहुर्तमात्र स्थितिको स्थापित करता है इन चार समयोंमे अप्रशस्त कर्मोके अनुभागकी प्रतिसमय अपवर्तना होती है एक एक समयमें एक एक स्थितिकांडकका घात होता हैं उतरनेके प्रथम समयसे लेकर शेष स्थितिके संख्यात बहुभागको, तथा शेष अनुभागके अनन्त बहुभागको भी नष्ट करता है लोकपूरणसमुदघातके अनन्तर समयसे लेकर स्थितिकांडक और अनुभागकांडकका अन्तर्मुहूर्तमात्र उत्कीरणकाल प्रवर्तमान रहता हैं

यहांसे अन्तर्मुहूर्त जाकर बादर काययोगसे बादर मनोयोगका निरोध करता है तत्पश्चात अन्तर्मुहुर्तसे बादर काययोगसे बादर वचनयोगका निरोध करता है पुन:अन्तर्मुहूर्तसे बादर काययोग बादर उच्छवास-निच्छवासका निरोध करता है तत्पश्चात अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म काययोगसे सूक्ष्म मनोयोगका निरोध करता है पुन: अन्तर्मुहुर्त जाकर सूक्ष्म काययोगसे सूक्ष्म

सुहुमउस्सासणिस्सासं (१ सुहुमउस्सासं मु.) णिरुंभदि

तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण सुहुमकायजोगेण सुहुमकायजोगं णिरुंभमाणो (२ ततो नंतरसमये सूक्ष्मकाययोगोपष्टम्भादन्तर्मुहूर्त्तमात्रेण सुक्ष्मवाग्योगं निरुणध्दि ततो निरुध्दसूक्ष्म-वाग्योगों तर्मुहर्त्तमास्ते, नान्यसूक्ष्मयोगनिरोधं प्रति प्रयत्नवान भवतित ततो नुन्तरसमये सूक्ष्मकाययोगोपष्टम्भा-त्यूक्ष्ममनोयोगमन्तर्मुहूर्तमात्रेण निरुणध्दि तत: पुनरपि अन्तर्मुहूर्तमास्ते तत: सूक्ष्मकाययोगबलात्सूक्ष्मकाययोग-मन्तर्मुहूर्तेन निरुणध्दि पंचसंग्रह १ पृ ३२.) इमाणि करणाणि करेदि (३ बादरमण वचि उस्सास कायजोगं तु सुहुमचउक्कं रुंभदि कमसो बादरसुहमेण य कायजोगेण एक्केक्कस्स णिठंभणकालो अंतोमुहुत्तमेत्तो हु सुहुमं देहणिमाणमाणं हियमणि करणाणि लब्धि. ६२८, ६३०.) - पढमसमए अपुव्वफददयाणि करेदि पुव्वफददयाण हेटठादो आदि-वग्गणाए अविभागपडिच्छेदाणमसंखेज्जदिभागमोकडडदि, जीवपदेसाणं च असंखेज्जदि-भागमोकडडदि एवमंतोमुहुत्तपुव्वफददयाणि करेदि (४ सुहुमस्स य पढमादो मुहुत्तअंतो त्ति कुणदि हु अपुव्वे पुव्वगफडढगहेटठा सेढिस्स असंखभागमिदो पुव्वदिवग्गणाणं जीवपदेसा विभागपिंडादो ँ होदि असंखं भागं अपुव्वपढमम्हि ताण दुंग लब्धि. ६३१-६३२. बादरं च काययोगं निरुंधान: पूर्वस्पर्ध्दकानामधस्तादपूर्वस्पर्ध्दकानि करोति xxx तंत्र पूर्वस्पर्ध्दकानामधस्तन्यो या: प्रथमादिवर्गणा: सन्ति, तासां ये वीर्याविभागपरिच्देदास्तेषामसंख्येयान भागानाकर्षति, एकमसंख्येयभागं मु चति जीवप्रदेशानामपि चैकमसंख्येयं भागमाकर्षति, शेषं सर्व स्थापयति एष बादरकाययोगनिरोधप्रथम- समयव्यापार: xxx द्वितीयसमये प्रथमसमयाकृष्टजीवप्रदेशासंख्येभागादसंख्येयगुणं भागं जीवप्रदेशानामाकर्षति, भावतो संख्येयान भागानाकर्षतीत्यर्थ: वीर्यविभागपरिच्छेदानामपि प्रथमसमयाकृष्टाद भागदसंख्येयगुणहीनं भागमा-कर्षति एवं प्रतिसमयं समाकृष्य तावदपूर्वस्पर्ध्दकानि करोति यावदन्तर्मुहूर्तचरमसमय: पंचसंग्रह १, पृ, ३१.) असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए जीवपदेसाणं च

असंखेज्जगुणाए सेडीए (५ उक्कटटदि पडिसमयं जीवपदेसे असंखगुणियकमे कुणदि अपुव्वफडढयं तग्गुणहीणक्कमेणेव लब्धि. ६३३.) अपुव्वफददयाणि सेडीए असंखेज्जदि-भागो, सेडीवग्गमूलस्स वि असंखेज्जदिभागो, पुव्वफददयाणं पि असंखेज्जदिभागो
उच्छवासका निरोध करता है

पुन: अन्तर्मुहूर्त जाकर सूक्ष्म काययोगसे सूक्ष्म काययोगका निरोध करता हुआ इन करणोंको करता है-- प्रथम समयमें अपूर्वस्पर्ध्दकोंको करता हुआ पूर्वस्पर्ध्दकोंकी प्रथम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है, जीव-प्रदेशोंके भी असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है इस प्रकार अन्तर्मुहूर्तकाल तक अपूर्वस्पर्ध्दकोंको करता है इन अपूर्वस्पर्ध्दकोंको प्रतिसमय असंख्यातगुणी हीन श्रेणीके क्रमसे करता है परन्तु जीवप्रदेशोंका अपकर्षण असंख्यातगुणित श्रेणीके क्रमसे होता है ये सब अपूर्वस्पर्ध्दक जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग, श्रेणिवर्गमूलकेभी असंख्यातवें

सव्वाणि अपुव्वफददयाणि (१ सेढिपदस्स असंखं भागं पुव्वाण फडढयाणं वा सव्वे होंति अपुव्वा हु फडढया जोगपडिबध्दा लब्धि. ६३४. कियन्ति पुन: स्पर्ध्दकानि करोतीति चेत, उच्चते - श्रेणिवर्गमूलस्यासंख्येभागत्राणि, पूर्वस्पर्ध्दकानामसंख्येयभागमात्राणीति यावत पंचसंग्रह १, पृ. ३१.)

एत्तो अंतोमुहुत्तं किटटीओ करेदि अपुव्वफददयाणमदिवग्गणाए अविभाग पडिच्छेदाणमसंखेज्जदिभागमोकडडदि जीवपदेसाणं असंखेज्जदिभागमोकडडदि (२ एत्तो करेदि किटिट मुहुत्त अंतोत्ति ते अपुव्वाणं हेटठादु फडढयाणं सेढिस्स असंखभागमिदं अपुव्वादि - वग्गणाणं जीवददेसाविभागपिंडादो होंति असंखं भागं किटटीपढमम्हि ताण दुगं लब्धि. ६३५-६३६...) एत्थ अंतोमुहुत्तं किटटीओ करेदि असंखेज्जगुणहीणाए सेडीए जीवपदेसाणमसंखेज्जगुणाए सेडीए ओकडडदि (३ उक्कटटदि पडिसमयं जीवपदेसे असंखगुणियकमे तग्गुणहीणकमेण य करेदि किटिट तु पडिसमए लब्धि. ६३७.) किटटीगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो किटटीओ सेडीए असंखेज्जदिभागो, अपुव्वफददयाणं पि असंखेज्जदिभागो किटटीकरणे णिटिठदे तदो से काले पुव्वफददयाणि अपुव्वफददयाणि च णासेदि अंतोमुहुत्तं किटटीगदजोगो होदि (५ किटटीकरणे चरमे से काले उभयफडढये सव्वे

णासेइ मुहुत्तं तु किटटीगदवेदगो जोगी लब्धि. ६४०.) सुहुम-किरियं अप्पडिवादि ज्झाणं ज्झायदि किटटीणं च चरिमसमए असंखेज्जे भागे णासेदि (६ किटटीगजोगी झाणं झायदि तदियं खु सुहमकिरियं तु चरिमे असंखभागे किटटीणं णासदि सजोगी लब्धि. ६४३.)

भाग, और पूर्वस्पर्द्धकोंके भी असंख्यातवें भागमात्र होते हैं

अपूर्वस्पर्द्धकोंको करनेके पश्चात अन्तर्मुहूर्त काल तक कृष्टियोंको करता है अपूर्व-स्पर्द्धकोंकी प्रथम वर्गणासम्बन्धी अविभागप्रतिच्छेदोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है कृष्टियोंको करनेवाले जीवप्रदेशोंके असंख्यातवें भागका अपकर्षण करता है यहां अन्तर्मुहूर्त काल तक असंख्यातगुणी हीन श्रेणीकेक्रमसे कृष्टियोंको करता है किन्तु जीवप्रदेशोंका अपकर्षण असंख्यातगुणित श्रेणीसे करता है कृष्टिगुणकार पल्योपमकाअसंख्यातवां भाग है ये कृष्टियां श्रेणीके असंख्यातवें भाग और अपूर्वस्पर्द्धकोंके भी असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं कृष्टिकरणके समाप्त होनेपर उसके अनन्तर समयमें पूर्वस्पर्द्धकों और अपूर्वस्पर्द्धकोंको नष्ट करता है अन्तर्मुहूर्त काल तक कृष्टिगत योगवाला होता है उस समय केवली भगवान सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती शुल्कध्यानको ध्याते हैं सयोगि-गुणस्थानके अन्तिम समयमें कृष्टियोंके असंख्यात बहुभागोंकी नष्ट करते हैं योगका निरोध

चूलियाए सम्मत्तुप्पत्तीए अजोगिजिणपरुवणं

जोगम्हि णिरुध्दम्हि आउसमाणिभवंति

तदो अंतोमुहुत्तं जोगाभावेण णिरुध्दासवत्तादो सेलेसिं पडिवज्जदि (१ सीलेसि संपत्तो णिरुध्दणिस्सेसआसओ जीवो बंधरयविप्पमुक्को गय जोगो केवली होइ लब्धि. ६४७. अष्टादशसहस्त्रशीलाधिपत्यं प्राप्त: गो.जी. ६५ जी. प्र. टीका शीलेश: सर्वसंवररुपचरणप्रभुस्तस्येयमवस्था शैलेशो वा मेरुस्तस्येव या वस्था स्थिरतासाधर्म्यात सा शैलेशी सा च सर्वथा योगनिरोधे पंचन्हस्वाक्षरोच्चार-कालमाना व्याख्याप्रज्ञप्ति १,८, ७२ अभयदेवीया वृत्ति:), समुच्छिण्ण-किरियं अणियटटीसुक्कज्झाणं झायदि (२ ततस्तदनन्तरं समुच्छिन्नक्रियानिवर्तिध्यानमारभते समुच्छिन्नप्राणापानप्रचारसर्वकायवाङ-नोयोगसर्व-प्रदेशपरिस्पन्दक्रियाव्यापारत्वात्समुच्छिन्नक्रियानिवर्तीत्युच्यते स.सि. ९,४४. से काले जोगिजिणो ताहे आउगसमा हि कम्माणि तुरियं तु समुच्छिण्णं किरियं झायदि अयोगिजिणी लब्धि. ६४६.) देवगदीए पंचण्हं सरीराणं पंचसरीरबंधणाणं पंचसरीरसंघादाणं छण्हं संठाणाण तिण्णमंगोवंगाणं

छण्हं संघडणाणं पंचण्हं वण्णाणं दोण्हं गंधाणं पंचण्हं रसाणं अटठण्हं पासाणं मणुस-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वीए अगुरुगलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सासाणं पसत्थविहायगदीणं पत्तेयसरीर-अपज्जत्ताणं थिराथिर सुभासुभ-सुस्सरदुस्सराणं दुभग-अणादेज्जाणं अजसकित्ति-णिमिण-णीचागोदाणं अण्णदर-वेदणीयाणं संतस्स सेलेसिं अध्दाए दुचरिमसमए वोच्छेदो अण्णदरवेदणीय-मणुसगदि-मणुसाउ-पंचिदियजादि-तस-बादर-पज्जत-सुभग आदेज्ज-जसकित्ति-तित्थयर-उच्चागोदं ति एदाओ पयडीओ सेलेसिं चरिमसमए वोच्छिण्णाओ सव्वकम्मविप्पमुक्को एगसमएण

हो जानेपर नाम, गोत्र व वेदनीय, ये तीन अघातिया कर्म आयुकेसदृश्श हो जाते हैं

तत्पश्चात अन्तर्मुहूर्त काल तक अयोगिकेवलीके योगका अभाव हो जानेसे आस्त्रवका निरोध हो जाता है, अत एव वे शैलेश्य अर्थात अठारह सहस्त्र शीलोंकेऐकधिपत्यको प्राप्त होते हैं उस समय वे अयोगी भगवान समुच्छिन्निक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यानको ध्याते हैं देवगति, पांच शरीर, पांच शरीरबन्धन, पांच शरीरसंघात, छह संस्थान, तीन आंगोपांग, छह संहनन, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, मनुष्य-गत्यानुपूर्वी देवगत्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, अप्रशस्त विहायोगति, प्रत्येकशरीर, अपर्याप्त, स्थिर-अस्थिर, शुभ-अशुभ, सुस्वर-दुस्वर, दुर्भग, अनादेय, अयश:कीर्ति, निमाण, नीचगोत्र और दोनों वेदनीयोंमेंसे अनुदयप्राप्त एक वेदनीय, इन तिहत्तर प्रकृतियोंकेसत्वकी व्युच्छित्ति अयोगिकालके द्विचरम समयमें हो जाती हैं शेष एक वेदनीय, मनुष्यगति, मनुष्यायु, पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यश:कीर्ति, तीर्थकर और उच्चगोत्र, ये बारह प्रकृतियां अयोगिकालके अन्तिम समयमें व्युच्छिन्न हो जाती हैं तब सर्व कर्मोसे वियुक्त होकर

सिध्दि गच्छदि (१ स.सि.१०. २. बाहत्तरिपयडीओ दुचरिमगे तेरसं च चरिमम्हि झाणचलणेण कवलिय सिध्दो सो होदि से काले लब्धि. ६४८. देहादीफस्संता थिरसुहसरसुरविहायदुग दुभणं णिमिणाजस णादेज्जं पत्तेयापुण्ण अगुरुचऊ अणुदयंतदियं णीचमजोगिदुचरिमम्मि सत्तवोच्छिण्णा गो.क. ३४०-३४१. तस्मिश्र द्विचरमसमये देवगतिदेवानुपूर्वी ......द्विसप्ततिसंख्यानि स्वरुपसत्तामधिकृत्य क्षयमुपगच्छति xxx चरमसमजे च सातासातान्यतरवेदनीयमनुष्यगतिममनुष्यानुपूर्वीमनुष्यायु: पंचेन्द्रियजातित्र

ससुभगादेययश:कीर्तिपर्याप्तबादरतीर्थकरो- च्चैर्गोत्ररुपाणां त्रयोदशप्रकृतीनां सत्ताव्यवच्छेद: अन्ये पुनराहु: - मनुष्यानुपूवर्या द्विचरमसमये व्यवच्छेद:, उदया-भावात xxx इति तन्मतेन द्विचरमसमये त्रिसप्ततिप्रकृतीनां सत्ताव्यवच्छेद:, चरमसमये द्वादशानमिति पंचसंग्रह १, पृ. ३२.)

एवं दोहि सुत्तेहि सूइदत्थस्स परुवणाए कदाए संपुण्णं चारित्तप्पडिवज्जण-विहाणं परुविदं होदि

एवं अटठमीमहल्लचूलिया समत्ता

णवमी चूलिया

संपहि वासददसूइयं णवमं चूलियं वत्तइस्सामो तत्थ ताव पुव्वरुविदस्स अत्थस्स संभालणटठमुत्तरसुत्तं भणदि-

णेरइया मिच्छाइटठी पढमसम्मत्तमुप्पादेंति ॥ १ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो, चदुसु वि गदीसु पढमसम्मत्तमुप्पादेंति त्ति पुव्वं परुविदत्तादो

आत्मा एक समयमें सिध्दिको प्राप्त करता है

इस प्रकार दो सूत्रोंसे सूचित अर्थकी प्ररुपणा करनेपर सम्पूर्ण चरित्रकी प्राप्तिका विधान प्ररुपित होता है

इस प्रकार आठवीं महती चूलिका समाप्त हुई

अब हम (प्रथम चूलिकान्तर्गत प्रथम सूत्रमें) वा शब्दकेद्वारा सूचित (देखो पृ.१ और ४) गति-आगति नामक नौमी चूलिकाको कहेंगे इस प्रकरणमें पूर्वप्ररुपित अर्थका स्मरण करानेके लिये आचार्य आगेका सूत्र कहते हैं --

नारकी मिथ्यादृष्टि जीव प्रथम सम्यक्त्वको उत्पन्न करते हैं ॥ १ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, क्योंकि पूर्वमें यह प्ररुपित किया जा चुका है कि चारों ही गतियोंमें जीव प्रथम सम्यक्त्वको उत्पन्न करते हैं

चूलियाए गदियागदियाए सम्मत्तुप्पादणकारणाणि

उप्पादेंता कम्हि उप्पादेंति ? ॥ २ ॥

आसंकाए कारणाभावा णेदं सुत्तं वत्तव्वं कुदो? णेरइएसु पढमसम्मत्त-मुप्पाएंता पज्जता चे उप्पाएंति, णो अपज्जत्तेसु, त्ति पुव्वं पडिसिध्दत्तादो ? ण एस दोसो अपज्जत्तणामकम्मोदएण अपज्जता भण्णंति णेरइया पुण पज्जता चेय, तत्थ अपज्जत-णामकम्मस्सुदयाभावा ते च णेरइया पज्जत्तणामकम्मोदयं पडुच्च पज्जत्ता वि संता पज्जत्तिणिवत्ति, मणिव्वतिं त पडुच्च पज्जत्ता

अज्जत्ताय पडुच्च होंति एत्थ किं पज्जत-काले पढमसम्मत्तमुप्पादेंति, आहो अपज्जतकाले उप्पादेंति त्ति पुच्छा कदा तदो णिच्छयसमुप्पायणटठमुत्तरसुत्तं भणदि ---

पज्जत्तएसु उप्पादेंति, णो अपज्जत्तएसु || ३ ||

सुगममेदं

पज्जत्तएसु उप्पादेंता अंतोमुहुत्तप्पहुडि जाव उवरिमुप्पादेंति,

णो हेटठा || ४ ||

प्रथम सम्यक्तवको उत्पन्न करनेवाले नारकी जीव किस अवस्थामें उसे उत्पन्न करते है|| २||

शंका --- आशंकाका कोई कारण न होनेसे यह सूत्र नही कहना चाहिये, क्योंकि नारकी-योंमें प्रथम सम्यक्त्वको उत्पन्न करनेवाले जीव पर्याप्त अवस्थामें ही उत्पन्न करते है, अपर्याप्तोंमें नहीं इस प्रकार अपर्याप्त अवस्थामें प्रथम सम्यक्त्वकी उत्पत्तिका पहले ही प्रतिषेध किया जा चुका है ?

समाधान -- यह कोई दोष नही है अपर्याप्त नाम कर्मके उदयसे जीव अपर्याप्त कहलाते हैं किन्तु नारकी तो पर्याप्त ही होते हैं, क्योंकि नरकोंमें अपर्याप्त नामकर्मके उदयका अभाव है और वे नारकीं पर्याप्त नामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त होते हुए पर्याप्तियोंकी रचनाकी अपेक्षा पर्याप्त और पर्याप्तियोंकी रचना न होनेकी अपेक्षा अपर्याप्त होते हैं अतएव यहां सूत्रमें यह प्रश्न किया गया है कि नारकी पर्याप्त कालमें प्रथम सम्यक्त्व उत्पन्न करते हैं, अथवा अपर्याप्त कालमें उत्पन्न करते हैं अत: इस शंकाके उत्पन्न होनेपर निश्चय उत्पन्न करानेके लिये आचार्य आगेका सूत्र कहते हैं -

नारकी जीव पर्याप्तकोंमें ही प्रथम सम्यक्त्व उत्पन्न करते हैं, अपर्याप्तकोंमें नहीं || ३ ||

यह सूत्र सुगम है

पर्याप्तकोंमें उत्पन्न कहते हुए अन्तर्मुहूर्तसे लेकर आगे अन्ततक उत्पन्न करते हैं, पहले नहीं || ४ ||

१ संत्ता पज्जत्तणिव्वत्तिं पडुच्च पज्जत्ताय मु. २. जावत्तप्पाओग्गंतोमुहुत्तं उवरि मु.

पज्जत्ताणं सव्वत्थ सम्मत्तुप्पत्तीए पत्ताए तप्पडिसेहटठमेदं सुत्तामागदं त जहा- पज्जत्तपढमसमयप्पहुडि जाव तप्पाओग्गंतोमुहुत्तं ताव णिच्छएण पढमसम्मत्तं णो उप्पादेंति, अंतोमुहुत्तेण विणा पढमसम्मत्तपाओग्गविसोहीणमुप्पत्तीए अभावादो आउए अंतोमुहुत्तावसेसे वि णेरइया पढमसम्मत्तं ण पडिवज्जंति, तेण तत्थ पडिसेहो वत्तव्वो ? ण, पज्जवटिठयणयावलंबणेण पडिसमयं पुध पुध सम्मत्तभावे जीविददुचरिमसमओ त्ति पडिवज्जंतस्स तदुवलंभा॑ चरिमसमए वि ण पडिसेहो वत्तव्वो, दंसणमोहोदएण विणा उप्पण्णचरिमसमयसासणभावस्स वि उवयारेण पढमसम्मत्तववदेसादो अधवा देसामा-सिगसुत्तमेदं, तेण अवसाणे वि पढमसम्मत्तगहणस्स पडिसेहो सिध्दो होदि

एवं जाव सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ५ ॥

सुगममेदं सुत्तं किंतु पुव्विल्लसुत्तं सत्तमपुढवीए देसामासियं चेव, सत्तम-पुढविम्हि पढमवक्खाणस्स अणुववत्तीए

पूर्वोक्त सूत्रसे पर्याप्तकोंके सर्वकाल सम्यक्त्वोत्पत्तिका प्रसंग प्राप्त होता है, उसीके प्रतिषेधके लिये यह सूत्र आया है॑ वह इस प्रकार है -- पर्याप्त होनेके प्रथम समयसे लगाकर तत्प्रायोग्य अन्तर्मुहुर्त तक निश्चयसे जीव प्रथम सम्यक्त्व उत्पन्न नही करते, क्योंकि अन्तर्मुहूर्तकालके विना प्रथम सम्यक्त्व उत्पन्न करनेके योग्य विशुध्दिकी उत्पत्तिका अभाव है॑

शंका -- आयुके अन्तर्मुहूर्त शेष रहनेपर भी नारकी जीव प्रथम सम्यक्त्वको प्राप्त नही करते है, इसलिये उस कालमें भी सम्यक्त्वोत्पत्तिका अभाव करना चाहिये ?

समाधान -- नही, पर्यायार्थिक नयके अवलम्बनसे प्रत्येक समय पृथक सम्यक्त्वकी उत्पत्ति होनेपर जीवनके द्विचरिम समय तक भी सम्यक्त्वकी उत्पत्ति पायी जाती है चरिम समयमें भी सम्यक्त्वोत्पत्तिका प्रतिषेध नही कहा जा सकता, क्योंकि दर्शनमोहनीय कर्मके उदयके विना उत्पन्न होनेवाले चरमसमयवर्ती सासादनभावकी भी उपचारसे प्रथमसम्यक्त्व संज्ञा मानी जा सकती है अथवा, यह सूत्र देशामर्षक हे, जिससे जीवनके अवसान कालमें भी प्रथम सम्यक्त्वके ग्रहणका प्रतिषेध सिध्द हो जाता है

इस प्रकार एकसे लगाकर सातों पृथिवियोंमें नारकी जीव प्रथम सम्यक्त्व उत्पन्न करते हैं ॥ ५ ॥

यह सूत्र सुगम है किन्तु पूर्वोक्त सूत्र सप्तम पृथिवीके सम्बन्धमें देशामर्षक ही है, क्योंकि सातवीं पृथिवीमें प्रथम व्याख्यानकी उपपत्ति ठीक नही बैठती

विशेषार्थ --पूर्व सूत्र नं. ४ के प्रथम व्याख्यानमें जो पर्यायार्थिकनयसे जीवितके